अनुवाद

सब का नाश करने वाला मृत्यु और आगे होने वालों की उत्पत्ति का कारण भी मैं हूँ; स्त्रियों में कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा मैं हूँ।।३४।।

तात्पर्य

मनुष्य की मृत्यु जन्म से प्रतिक्षण होती रहती है। मृत्यु जीवमात्र को निरन्तर ग्रस रही है, परन्तु केवल अन्तिम प्रहार को ही 'मृत्यु' कहा जाता है। वह मृत्यु श्रीकृष्ण का रूप है। सब प्रकार की जीव-योनियाँ छः विकारों से युक्त हैं: जन्म, विकास, स्थिति, प्रजनन, क्षय और अन्त में विनाश। इन विकारों में से पहला गर्भ से जन्म होना है, जो श्रीकृष्ण का रूप है। जन्म से ही जीवन की सब भावी क्रियाओं का उपक्रम हुआ करता है।

यहाँ उल्लिखित सातों ऐश्वर्यों को स्त्रीवाचक माना गया है। जो नारी इनमें से कुछ अथवा सभी गुणों से युक्त हो, वह यश-लाभ करती है। संस्कृत पूर्ण रूप से सिद्ध भाषा है; इसलिए इसकी अनुपम कीर्ति है। अध्ययन को स्मरण रखने की सामर्थ्य स्मृति कहलाती है। विविध विषयों पर अधिक ग्रन्थों का अध्ययन करना आवश्यक नहीं है। थोड़े को स्मरण रखकर यथासमय उद्धृत करने की योग्यता भी एक ऐश्वर्य है।

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।।३५।।

बृहत्साम=बृहत्साम; **तथा**=और; **साम्नाम्**=गाने योग्य सामवेद की श्रुतियों में; **गायत्री**=गायत्रीमंत्र; **छन्दसाम्**=सब छन्दों में; **अहम्**=मैं (हूँ); **मासानाम्**=महिनों में; **मार्गशीर्षः**=मार्गशीर्ष मास; **अहम्**=मैं (हूँ); **ऋतूनाम्**=ऋतुओं में; **कुसुमाकरः**=वसन्त।

अनुवाद

मैं मन्त्रों में इन्द्र के लिए गाया जाने वाला बृहत्साम गान हूँ और छन्दों में ब्राह्मणों द्वारा नित्य उच्चारित गायत्रीमन्त्र हूँ; महीनों में मार्गशीर्ष मास हूँ और ऋतुओं में मैं वसन्त हूँ।।३५।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् पहले कह आये हैं कि सम्पूर्ण वेदों में सामवेद विशिष्ट है, क्योंकि यह विभिन्न देवताओं द्वारा गाए पद्यों से परिपूर्ण है। इन्हीं में से एक गीति का नाम 'बृहत्साम्' है। इस परमोत्तम मधुर संगीतमय श्रुति का गायन निशीथ (मध्यरात्रि) के समय किया जाता है।

संस्कृत में काव्य के लिए शास्त्र द्वारा निर्धारित विधान हैं। आधुनिक कविता की भाँति देवभाषा में लय और ताल की रचना मनमाने ढंग से नहीं की जाती। शास्त्रीय छन्दों में 'गायत्री' प्रधान है; इसलिए गुणवान् ब्राह्मण इसे जपते हैं। श्रीमद्भागवत में भी इस मन्त्र का उल्लेख है। इसका विशेष प्रयोजन स्वरूप